



INTERNATIONAL JOURNAL OF TRENDS IN EMERGING RESEARCH AND DEVELOPMENT

INTERNATIONAL JOURNAL OF TRENDS IN EMERGING RESEARCH AND DEVELOPMENT

Volume 3; Issue 4; 2025; Page No. 166-170

Received: 01-04-2025

Accepted: 05-05-2025

माध्यमिक विद्यालय में शारीरिक शिक्षा और खेल के प्रति रुचि और प्रेरणा के स्तर का अध्ययन करना

¹Chnadra Prabha Bharti and ²Dr. Anuj Kumar

¹Research Scholar, Department of Physical Education, Maharaja Agrasen Himalayan Garhwal University, Uttarakhand, India

²Associate Professor, Department of Physical Education, Maharaja Agrasen Himalayan Garhwal University, Uttarakhand, India

DOI: <https://doi.org/10.5281/zenodo.17604181>

Corresponding Author: Chnadra Prabha Bharti

सारांश

शिक्षा के लिए चुनौती न केवल संस्कृति का ज्ञान हस्तांतरित करना है, बल्कि छात्रों को उस ज्ञान की उनकी धारणा के अनुसार प्रतिबद्धता और जिम्मेदारी के माध्यम से अपने व्यवहार को सामान्य बनाने में मदद करके हस्तांतरण के लिए सिखाना भी है। आज यह चुनौती और अधिक कठिन होती जा रही है क्योंकि जटिल जीवनशैलियों मानव जाति में इस संचरण को बढ़ावा देने में उत्तरोत्तर कम प्रभावी होती जा रही हैं। पिछली पीढ़ियों के विपरीत, जब संकट कभी-कभार ही आते थे, आधुनिक मानव प्रतिदिन आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, पारिस्थितिक, घरेलू और वैश्विक संकटों के साथ जी रहा है। एक बच्चे के संपूर्ण विकास में शारीरिक शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है। उत्तराखंड में माध्यमिक शिक्षा के "माध्यमिक परीक्षा" में शारीरिक शिक्षा एक अध्ययन का विषय बन गई है। यह राज्य के विभिन्न विश्वविद्यालयों में स्नातक स्तर पर भी अध्ययन का विषय बन गई है। इस क्षेत्र में उन्नत अध्ययन के बढ़ते अवसर इस शिक्षा का संकेत देते हैं। यह एक बढ़ता हुआ क्षेत्र है और अधिक वैज्ञानिक होने के कारण इसकी तुलना अन्य उन्नत क्षेत्रों से की जा सकती है। यह समग्र शिक्षा प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग है। शारीरिक शिक्षा मनुष्य का एक क्रॉस सेक्शन अध्ययन है, न कि एक अनुदैर्घ्य और यह स्कूल स्तर के कार्यक्रम का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है। शारीरिक शिक्षा में दृष्टिकोण एक आकर्षक अवधारणा है क्योंकि यह शारीरिक शिक्षा से जुड़े विशेष दृष्टिकोण वस्तुओं के साथ व्यक्ति के पिछले अनुभवों को दर्शाता है। इस प्रकार शारीरिक शिक्षक कुछ समय से औपचारिक और अनौपचारिक रूप से दृष्टिकोणों को माप रहे हैं। हम अक्सर छात्रों, एथलीटों, शिक्षकों या अभिभावकों से पूछते हैं और उनकी राय केवल एक दृष्टिकोण की मौखिक अभिव्यक्ति होती है, लेकिन एक दृष्टिकोण को गैर-मौखिक रूप से भी व्यक्त किया जा सकता है। पिछले अनुभवों के आधार पर, शोध विद्वानों का विचार है कि दृष्टिकोण सबसे महत्वपूर्ण कारकों में से एक है जो स्कूलों और कॉलेजों में उत्पादक शारीरिक शिक्षा कार्यक्रम के विकास को प्रभावित करता है। इसलिए शारीरिक शिक्षकों के लिए शारीरिक शिक्षा कार्यक्रम के प्रति पूरे समाज के विचारों और विचारों का आकलन या स्पष्ट करना एक बहुत ही महत्वपूर्ण काम है।

मूलशब्द: गैर-मौखिक, शारीरिक शिक्षा, वैज्ञानिक, शारीरिक, राजनीतिक, सामाजिक

प्रस्तावना

आधुनिक दुनिया में खेल और शारीरिक शिक्षा के अनुप्रयोग का तरीका काफी बदल गया है।

नैश (1953) के अनुसार, शारीरिक शिक्षा संपूर्ण शैक्षिक प्रक्रिया का एक चरण है और यह प्रत्येक व्यक्ति की प्राकृतिक क्षमताओं का उपयोग करके उसे बौद्धिक, भावनात्मक, तंत्रिका-पेशी और जैविक रूप से विकसित होने में मदद करती है। जब भी खेल के मैदान, जिम या स्विमिंग पूल जैसे स्थानों पर शारीरिक शिक्षा गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं, तो ये परिणाम प्राप्त होते हैं।

मानव व्यक्तित्व का समग्र विकास या पूर्ण जीवन ही शारीरिक शिक्षा का लक्ष्य है। विलियम के अनुसार, शारीरिक शिक्षा के एक अग्रणी विशेषज्ञ को व्यक्तियों और समूहों को शारीरिक रूप से स्वस्थ, बौद्धिक रूप से चुनौतीपूर्ण और सामाजिक रूप से सुदृढ़ गतिविधियों में संलग्न होने के लिए सक्षम नेतृत्व, पर्याप्त सुविधाएँ और पर्याप्त समय प्रदान करने का प्रयास करना चाहिए। (सारंगल और कमलेश, 1991)

एक बच्चे का शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य, साथ ही सामाजिक और व्यक्तिगत कौशल का विकास जो उसे दूसरो

के साथ शांतिपूर्वक सह-अस्तित्व में रहने और एक सभ्य नागरिक बनने में सक्षम बनाता है, शारीरिक शिक्षा के लक्ष्य होने चाहिए।

व्यापक अर्थ में, "उद्देश्य" शब्द उन लक्ष्यों, उद्देश्यों और परिणामों को संदर्भित करता है जिन्हें शारीरिक शिक्षा कार्यक्रम में भाग लेकर प्राप्त किया जाना है।

दूसरे शब्दों में, किसी विशेषज्ञ के मार्गदर्शन में शारीरिक गतिविधियों में संलग्न होने से व्यक्तियों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। हम इन परिणामों को लक्ष्य कहते हैं। हेनरी और क्लार्क (1961)

1961 में, क्लार्क और हेनरी ने शारीरिक शिक्षा के लिए तीन लक्ष्य सुझाए।

1. शारीरिक स्वास्थ्य
2. समाज में दक्षता
3. संस्कृति।

क्लार्क के शारीरिक स्वास्थ्य लक्ष्यों के अनुसार, एक व्यक्ति को शारीरिक रूप से स्वस्थ तब माना जाता है जब उसने उच्च स्तर की सहनशक्ति विकसित कर ली हो और अपनी पूरी क्षमता से अपने कर्तव्यों का पालन करने में सक्षम हो। समूह में संतुष्ट, सक्रिय और समृद्ध जीवन जीने के लिए शारीरिक रूप से स्वस्थ होना आवश्यक है। इसमें जिम्मेदारी, पहल, टीम वर्क, निष्ठा और खेल भावना शामिल हैं।

क्लार्क और हेनरी (1961) के अनुसार, संस्कृति का तीसरा लक्ष्य अपने आस-पास के वातावरण के प्रति गहरी जागरूकता और सम्मान को बढ़ावा देना है। नृत्य, खेल और क्रीडाओं में भाग लेकर व्यक्ति विभिन्न राष्ट्रों के नैतिक और सौंदर्यपरक मूल्यों का ज्ञान प्राप्त करता है। इसके अतिरिक्त, क्लार्क ने लड़कियों के लिए लक्ष्यों का दस्तावेजीकरण किया है। इनमें स्वयं की सुंदरता और रूप-रंग, पारस्परिक संबंध और अवकाश गतिविधियों का आनंद शामिल हैं।

शारीरिक शिक्षा के सामान्य और विशिष्ट लक्ष्यों को कॉवेल और श्वेन (1961) ने पाँच श्रेणियों में विभाजित किया है।

1. प्राकृतिक शक्ति।
2. अनुकूली प्रयास जारी रखने की क्षमता।
3. मांसपेशियों और न्यूरॉन्स का समन्वय।
4. समायोजन और व्यक्तिगत, सामाजिक दृष्टिकोण।
5. बौद्धिक और व्याख्यात्मक विकास।
6. भावनाओं की प्रतिक्रियाएँ।

थकावट का सामना करने के लिए, वे शक्ति और सहनशक्ति के जैविक विकास की बात करते हैं। उनकी परिभाषा के अनुसार, तंत्रिका-पेशीय विकास में सामान्य मोटर क्षमताओं, खेल और गति की लय, और विशिष्ट खेल और क्रीडा कौशल का विकास शामिल है। सामाजिक और व्यक्तिगत दृष्टिकोण और समायोजन के संदर्भ में, ये आत्मविश्वास, सामाजिक संतुलन और अपनेपन की भावना के विकास को दर्शाते हैं। इसके अतिरिक्त, बौद्धिक और व्याख्यात्मक विकास समस्या-समाधान और विचार क्षमता को दर्शाते हैं। अंततः, ये भावनात्मक प्रतिक्रियाएँ व्यक्ति को शारीरिक कौशल विकसित करने में आने वाली असंख्य बाधाओं की सराहना करने और उनमें संतुष्टि पाने में सक्षम बनाती हैं।

1953 में, नैश ने शारीरिक शिक्षा के चार लक्ष्य निर्धारित किए। वे हैं:

1. जीवों का विकास।

2. तंत्रिका-मांसपेशियों का विकास।
3. व्याख्या का विकास।
4. भावनाओं का विकास।

साहित्य की समीक्षा

कैमरुन एट अल. (1992) द्वारा किए गए एक शोध में औसत और उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर वाले शहरी बच्चों के दो समूहों की तुलना 5 से 19 वर्ष की आयु के समान संख्या वाले ग्रामीण बच्चों से की गई। निष्कर्ष से पता चला कि औसत सामाजिक-आर्थिक स्थिति वाले शहरी बच्चे अन्य श्रेणियों की तुलना में काफी हल्के और छोटे थे, जबकि उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर वाले शहरी बच्चे अन्य सभी समूहों की तुलना में बड़े थे। दोनों ग्रामीण समूहों में दोनों शहरी समूहों की तुलना में धीमी दर से वृद्धि जारी रही। यह पाया गया कि मजदूरों और किसानों के बच्चों का वजन सभी उम्र के बच्चों की तुलना में काफी कम था।

पैटर-ब्रिक एट अल. (1996) द्वारा किए गए एक शोध ने नेपाली बेघर बच्चों के स्वास्थ्य और जीवनशैली की जांच की और उनकी तुलना 6 से 14 वर्ष की आयु के अन्य स्थानीय बच्चों से की। कुल 307 लड़कों का वजन और ऊँचाई मापी गई। 307 लड़कों में से 111 बेघर थे, 62 अवैध रूप से रहने वाले थे, 82 संपन्न स्कूलों में जाते थे, और 52 ग्रामीण इलाकों में रहते थे। निष्कर्ष से संकेत मिलता है कि सभी समूहों ने – स्कूली लड़कों को छोड़कर – बौनेपन की सूचना दी। इसके अतिरिक्त, यह भी कहा गया कि बेघर लड़कों की विकास स्थिति उनके बेघर रहने की अवधि से अप्रभावित थी।

केप के स्कूली बच्चों के शारीरिक विकास और कार्य के पैटर्न की जाँच हेनेबर्ग और लाउ (1998) द्वारा की गई थी। केप टाउन महानगरीय क्षेत्र में, 5 से 20 वर्ष की आयु के 906 पुरुष और 1,068 महिलाएँ थीं; कारु क्षेत्र में, 5 से 19 वर्ष की आयु के 834 पुरुष और 940 महिलाएँ थीं जिनका सामाजिक-आर्थिक स्तर कमजोर था। बच्चों के मानवमिति, पकड़ शक्ति और नाड़ी दर के माप लिए गए। यौवनपूर्व शहरी बच्चों का वजन और ऊँचाई संयुक्त राज्य अमेरिका के संदर्भ आँकड़ों के समान थी। यौवनोत्तर बच्चों की ऊँचाई और वजन अमेरिकी मानक आँकड़ों से कम थी। ग्रामीण बच्चों की ऊँचाई और वजन शहरी बच्चों की तुलना में लगातार कम थे। शहरी बच्चों की त्वचा की तह की मोटाई अमेरिकी संदर्भ मानों के बराबर या उससे अधिक थी। ग्रामीण और शहरी बच्चों की तुलना करने पर, यह पाया गया कि शहरी बच्चों के कार्यात्मक संकेतक काफी कमजोर थे।

उद्देश्य/अध्ययन की आवश्यकता

अध्ययन के मुख्य उद्देश्य इस प्रकार हैं:

1. माध्यमिक विद्यालय में शारीरिक शिक्षा और खेल के प्रति रुचि और प्रेरणा के स्तर का अध्ययन करना।
2. ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक विद्यालयों में खेल कार्यक्रमों का एक आलोचनात्मक अध्ययन

शोध पद्धति

विश्लेषण का प्रकार अध्ययन में आँकड़ों के सार को परिभाषित करता है। आँकड़ों की प्रकृति को देखते हुए, वर्तमान में चल रहा कार्य गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों पहलुओं पर आधारित होगा, लेकिन मुख्य रूप से मात्रात्मक पहलू पर आधारित है, क्योंकि इस विश्लेषण के अधिकांश निष्कर्ष परिमाणित मापों पर केंद्रित हैं। खेल के प्रति हमारे दृष्टिकोण पर सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव प्रत्यक्ष अनुभव और अवलोकन से आता है। इसलिए, बच्चों को सकारात्मक खेल अनुभव प्रदान करना और उनके प्रयासों को प्रोत्साहित और पुरस्कृत करना आवश्यक है। खेल के प्रति लोगों

का दृष्टिकोण खेल में उनकी भागीदारी से निकटता से जुड़ा हुआ है। जीवन के बहुत बाद में भी, लोगों के खेल के प्रति दृष्टिकोण को बदलना संभव होगा। संज्ञानात्मक असंगति और आत्म-धारणा के सिद्धांत खेलों के प्रति दृष्टिकोण बदलने में विशेष रूप से उपयोगी साबित हुए हैं।

विषयों का चयन

ये विषय उत्तराखंड के 17 जिलों के लगभग 5000 (पाँच हजार) क्षेत्रों में होंगे। इस अध्ययन में उत्तराखंड के ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में रहने वाले विभिन्न श्रेणियों के लोगों, जैसे शिक्षक (पुरुष और महिला), अभिभावक (पुरुष और महिला), दिहाड़ी मजदूर, व्यवसायी और कार्यालय जाने वाले लोगों को शामिल किया जाएगा।

परीक्षण की विश्वसनीयता और वैधता

परीक्षण की विश्वसनीयता के लिए, शोधार्थी द्वारा ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के 200 विषयों पर एक प्रायोगिक अध्ययन किया जाएगा। प्रश्नावली की वैधता के लिए, शोधार्थी कुछ साहित्य का सर्वेक्षण करने के बाद प्रश्न तैयार करेगा और पर्यवेक्षक के साथ इस क्षेत्र के तीन विशेषज्ञों द्वारा उनकी जाँच करवाएगा। विशेषज्ञों की सलाह सुनने के बाद प्रश्नों को पुनः तैयार किया जाएगा और अंततः प्रायोगिक अध्ययन के लिए आवेदन करने से पहले विशेषज्ञों द्वारा उन्हें अनुमोदित किया जाएगा।

प्रायोगिक अध्ययन

विश्लेषण के लिए आँकड़े एकत्र करने के माध्यम से अध्ययन के वास्तविक संचालन से पहले, शोधार्थी एक प्रायोगिक अध्ययन करेगा। 285 विषयों का ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों से यादृच्छिक रूप से चयन किया जाएगा ताकि शोधार्थी द्वारा प्रश्नावली के साथ-साथ विषयों की प्रतिक्रियाओं के संदर्भ में विश्वसनीयता का परीक्षण किया जा सके। इन दो सौ अस्सी पाँच विषयों पर एकत्रित आँकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण के बाद, यह सामने आया कि विषयों की प्रतिक्रियाएँ अध्ययन के उद्देश्यों के साथ-साथ प्रश्नावली के निर्माण के उद्देश्यों को भी पूरी तरह से प्रतिबिंबित करेंगी, जिसका उद्देश्य कुछ महत्वपूर्ण पहलुओं के संबंध में स्वतंत्र और सहज प्रतिक्रियाएँ प्राप्त करना है, जो माध्यमिक शिक्षा के स्तर पर शारीरिक शिक्षा और खेलकूद के प्रति आम जनता के दृष्टिकोण का आकलन करने में योगदान दे सकते हैं। जहाँ तक अध्ययन के पायलट प्रोजेक्ट में ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों के विषयों पर प्रश्नावली के प्रशासन का संबंध है, यह भी सामने आया कि प्रश्नों के उत्तर देते समय उत्तरदाताओं में कोई भ्रम नहीं होगा। यह इसलिए संभव होगा क्योंकि किसी प्रेरक तकनीक का उपयोग नहीं किया जाएगा और प्रश्नावली के प्रशासन से पहले छात्र द्वारा दिए गए निर्देश एक समान होंगे।

डेटा संग्रहण

डेटा संग्रहण, शोध गतिविधियों के लिए पूर्ण और सटीक डेटा प्राप्त करने हेतु स्रोतों से डेटा एकत्र करने और मापने का व्यवस्थित तरीका है। अध्ययन के सभी क्षेत्रों में, तथ्य संग्रहण घटक, शरीर विज्ञान और सामाजिक विज्ञान, मानविकी और निगमों के साथ असामान्य नहीं है। यह वैज्ञानिकों और विश्लेषकों को एकत्रित जानकारी के रूप में प्रमुख कारकों को एकत्रित

करने की अनुमति देता है। विषय-वस्तु के संदर्भ में विभिन्न दृष्टिकोणों के विपरीत, सही और सत्य अनुक्रम बनाए रखने का महत्व समान रहता है। शोध की विश्वसनीयता बनाए रखने और उत्कृष्ट परिणामों और उनके निष्कर्षों को सुनिश्चित करने के लिए वर्तमान डेटा संग्रहण आवश्यक है। अध्ययन लक्ष्यों के लिए प्राथमिक और द्वितीयक स्रोत, दोनों ही एक मूल्यवान उपकरण हैं।

प्राथमिक डेटा

अपरिष्कृत आँकड़े प्राथमिक रिकॉर्ड होते हैं जो स्रोत पर एकत्र किए जाते हैं। प्राथमिक आँकड़े सर्वेक्षणों, टिप्पणियों, साक्षात्कारों, प्रश्नावली और परीक्षणों के माध्यम से प्रत्यक्ष दृष्टिकोण से प्राप्त किए जाते हैं। प्राथमिक डेटा विशेष निष्कर्ष होते हैं, जो प्रत्यक्ष अध्ययन के माध्यम से एकत्र किए जाते हैं।

द्वितीयक डेटा

द्वितीयक डेटा उपयोगकर्ता के बजाय किसी व्यक्ति द्वारा एकत्र किया गया डेटा होता है। एक शोधकर्ता जो विश्लेषण/शोध अध्ययन से संबद्ध नहीं है, वह किसी भिन्न उद्देश्य के लिए द्वितीयक जानकारी एकत्र करता है, और अतीत में, विभिन्न समयों पर, ऐसे आँकड़े प्राथमिक आँकड़ों की तुलना में आसानी से उपलब्ध और लागत प्रभावी रहे हैं।

परिणाम और चर्चा

तालिका 1: ग्रामीण और शहरी लड़कों के बीच कुल भुजा लंबाई की तुलना

आयु वर्ग	ग्रामीण (N=2500)		शहरी (N=2500)		ज- मान
	माध्य (सेमी)	एसडी	माध्य (सेमी)	एसडी	
12 वर्ष	62.16	5.41	60.56	4.42	1.99
13 वर्ष	67.66	5.85	62.40	5.56	3.51**
14 वर्ष	68.73	5.84	63.83	4.28	3.60**
15 वर्ष	70.63	5.59	66.43	5.18	2.96**
16 वर्ष	72.43	4.41	70.80	4.17	2.31*
17 वर्ष	74.13	3.56	72.50	2.77	1.92

* $p < 0.05$ दर्शाता है, ** $p < 0.01$ दर्शाता है

तालिका 1 ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के लड़कों की कुल भुजाओं की लंबाई दर्शाते हैं। तालिका के अनुसार, 12 वर्ष आयु वर्ग के ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के लड़कों की कुल भुजाओं की लंबाई में कोई स्पष्ट अंतर नहीं था। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के 13 वर्षीय लड़कों की तुलना करने पर, ग्रामीण क्षेत्रों के लड़कों की भुजाएँ कुल मिलाकर काफी लंबी थीं (ज=3.51, चढ0.01)। इसी प्रकार, 14 वर्ष आयु वर्ग के ग्रामीण क्षेत्रों के लड़कों की भुजाएँ शहरी क्षेत्रों के लड़कों की तुलना में कुल मिलाकर काफी लंबी थीं (ज=3.60, चढ0.01)। 15 वर्ष आयु वर्ग में, यह भी पाया गया कि ग्रामीण लड़कों की भुजाओं की कुल लंबाई शहरी लड़कों की तुलना में काफी अधिक थी (ज=2.96, चढ0.01)। इसी प्रकार, 16 वर्ष आयु वर्ग के ग्रामीण और शहरी लड़कों की तुलना करने पर, ग्रामीण लड़कों की कुल भुजाएँ काफी लंबी पाई गई (ज = 2.31, चढ 0.05)। हालाँकि, 17 वर्ष आयु वर्ग के ग्रामीण और शहरी लड़कों के बीच कुल भुजाओं की लंबाई के संबंध में कोई उल्लेखनीय अंतर नहीं पाया गया।

तालिका 2: ग्रामीण और शहरी लड़कों की ऊपरी भुजाओं की लंबाई की तुलना

आयु वर्ग	ग्रामीण (N=2500)		शहरी (N=2500)		ज- मान
	माध्य (सेमी)	एसडी	माध्य (सेमी)	एसडी	
12 वर्ष	24 ^{३३} 0	2 ^{२२} 8	22 ^{३३} 0	1 ^{६२} 2	3 ^{७२} 2''
13 वर्ष	26 ^{३३} 0	3 ^{०१} 0	23 ^{०६} 0	2 ^{२६} 6	4 ^{५४} 8''
14 वर्ष	26 ^{९०} 0	2 ^{३९} 9	24 ^{२३} 0	2 ^{०४} 4	4 ^{५२} 2''
15 वर्ष	27 ^{९६} 0	2 ^{८४} 4	25 ^{३०} 0	2 ^{८३} 3	3 ^{५१} 1''
16 वर्ष	28 ^{३३} 3	3 ^{०३} 3	27 ^{४०} 0	2 ^{५७} 7	1 ^{२४} 2
17 वर्ष	30 ^{२०} 2	2 ^{५७} 7	30 ^{०३} 0	2 ^{०२} 0	1 ^{९४} 4

*दर्शाता है $p < 0.05$

शहरी और ग्रामीण लड़कों की ऊपरी भुजाओं की लंबाई तालिका 2 में दर्शाई गई है। तालिका के अनुसार, ग्रामीण क्षेत्रों के लड़कों की ऊपरी भुजाएँ 12 वर्ष की आयु वर्ग के शहरी लड़कों की तुलना में काफी लंबी थीं (ज=3.72, च ढ 0.05)। 13 वर्ष की आयु वर्ग में, ग्रामीण क्षेत्रों के लड़कों की ऊपरी भुजाएँ शहरी क्षेत्रों के लड़कों की तुलना में काफी लंबी थीं (ज=4.52, च ढ 0.01)। 14 वर्ष की आयु वर्ग में ग्रामीण लड़कों की ऊपरी भुजाओं की लंबाई शहरी लड़कों की तुलना में काफी लंबी थी (ज=4.52, च ढ 0.01)। इसी प्रकार, 15 वर्ष की आयु वर्ग के ग्रामीण और शहरी लड़कों की तुलना करने पर, यह पाया गया कि 15 वर्ष की आयु वर्ग के ग्रामीण और शहरी लड़कों की ऊपरी भुजाएँ काफी लंबी थीं (ज=3.51, च ढ 0.01)। हालाँकि, 16 और 17 वर्ष की आयु वर्ग में ग्रामीण और शहरी लड़कों की ऊपरी भुजा की लंबाई के संदर्भ में कोई स्पष्ट अंतर नहीं पाया गया।

तालिका 3: ग्रामीण और शहरी लड़कों की निचली भुजा की लंबाई की तुलना

आयु वर्ग	ग्रामीण (N=2500)		शहरी (N=2500)		ज-मान
	माध्य (सेमी)	एसडी	माध्य (सेमी)	एसडी	
12 वर्ष	35.90	3.36	36.26	3.34	0.71
13 वर्ष	40.43	3.23	37.56	4.63	1.74
14 वर्ष	40.86	3.74	37.56	3.33	2.44*
15 वर्ष	40.66	3.09	38.76	3.01	2.33*
16 वर्ष	41.76	2.84	40.40	2.58	1.87
17 वर्ष	42.33	2.28	41.86	2.18	0.77

*दर्शाता है $p < 0.05$

तालिका 3 ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के लड़कों की निचली भुजाओं की लंबाई दर्शाते हैं। तालिका के अनुसार, 12 वर्ष आयु वर्ग के ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के लड़कों की निचली भुजाओं की लंबाई में कोई स्पष्ट अंतर नहीं था। निचली भुजाओं की लंबाई के संदर्भ में ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के 13 वर्ष के लड़कों के बीच कोई स्पष्ट अंतर नहीं था। शहरी लड़कों के विपरीत, 14 वर्ष आयु वर्ग के ग्रामीण लड़कों की निचली भुजाएँ काफी लंबी थीं (ज = 2.44, च ढ 0.05)। इसी प्रकार, 15 वर्ष आयु वर्ग के ग्रामीण लड़कों की निचली भुजाओं की लंबाई शहरी लड़कों की तुलना में काफी लंबी थी (ज = 2.33, च ढ 0.05)। हालाँकि, 16 और 17 वर्ष आयु वर्ग में निचली भुजाओं की लंबाई के संदर्भ में ग्रामीण और शहरी लड़कों के बीच कोई स्पष्ट अंतर नहीं था।

तालिका 4: ग्रामीण और शहरी लड़कों के बीच कुल पैर की लंबाई की तुलना

आयु वर्ग	ग्रामीण (N=2500)		शहरी (N=2500)		ज-मान
	माध्य (सेमी)	एसडी	माध्य (सेमी)	एसडी	
12 वर्ष	80.53	6.37	77.00	6.35	1.51
13 वर्ष	80.40	6.06	78.56	7.70	1.01
14 वर्ष	82.30	9.75	80.30	5.77	1.43
15 वर्ष	85.76	10.16	82.80	5.51	1.38
16 वर्ष	87.46	6.43	83.86	6.32	2.13*
17 वर्ष	92.06	5.56	87.93	6.49	3.23**

तालिका 4 ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के लड़कों की कुल टांगों की लंबाई दर्शाते हैं। तालिका के अनुसार, 12 वर्ष की आयु वर्ग में ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के लड़कों की कुल टांगों की लंबाई में कोई स्पष्ट अंतर नहीं था। इसी प्रकार, ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में रहने वाले 13, 14 और 15 वर्ष की आयु के लड़कों के बीच कुल टांगों की लंबाई में कोई उल्लेखनीय अंतर नहीं था। शहरी लड़कों के विपरीत, 16 वर्ष की आयु वर्ग में ग्रामीण लड़कों के टांगें कुल मिलाकर काफी लंबी पाई गई (ज = 2.13, च ढ 0.05)। 17 वर्ष की आयु वर्ग में, ग्रामीण लड़कों की कुल टांगों की लंबाई शहरी लड़कों की तुलना में काफी लंबी थी (ज = 3.23, च ढ 0.01)।

निष्कर्ष

डेटा विश्लेषण के अनुसार, 12 साल की आयु वर्ग में ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के लड़कों के बीच ऊंचाई या वजन में कोई सराहनीय अंतर नहीं था। यह पाया गया कि शहरी लड़कों का बॉडी मास इंडेक्स ग्रामीण लड़कों की तुलना में काफी अधिक था। पैर की लंबाई, ऊपरी पैर की लंबाई, निचले पैर की लंबाई, हाथ की लंबाई और निचले हाथ की लंबाई ग्रामीण इलाकों और शहर के पुरुषों के बीच काफी भिन्न नहीं थी। हालाँकि, शहरी पुरुषों की तुलना में, ग्रामीण लड़कों की ऊपरी भुजा काफी लंबी थी। 12 साल की आयु वर्ग में, ग्रामीण और शहरी लड़कों के विभिन्न शारीरिक घटक परिधि के बीच कोई स्पष्ट भिन्नता नहीं थी। इसी तरह, ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के लड़कों के बीच शरीर के विभिन्न अंगों के आकार में कोई सराहनीय भिन्नता नहीं थी। ग्रामीण क्षेत्रों के लड़कों की तुलना में, शहरी लड़कों के बाइसेप्स, ट्राइसेप्स और सुप्रा-इलियक स्किनफोल्ड की मोटाई के औसत मूल्य स्पष्ट रूप से अधिक थे शारीरिक संरचना विश्लेषण के अनुसार, शहरी लड़कों का प्रतिशत और कुल शारीरिक वसा ग्रामीण लड़कों की तुलना में बहुत अधिक था। दोनों समूहों के बीच दुबले शरीर के द्रव्यमान में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं था। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के 12 वर्षीय लड़कों के शारीरिक फिटनेस मेट्रिक्स की तुलना करने पर, यह पाया गया कि ग्रामीण लड़के शहरी लड़कों की तुलना में काफी तेज थे। इसके अलावा, ग्रामीण लड़कों की पकड़ की ताकत और खड़े होकर चौड़ी छलांग उनके शहरी समकक्षों की तुलना में काफी अधिक थी। हालाँकि, लचीलेपन, मेडिसिन बॉल फेंकने, खड़े होकर लंबवत कूद, या सहनशक्ति के मामले में दोनों समूहों के प्रदर्शन में कोई स्पष्ट परिवर्तन नहीं हुआ।

सन्दर्भ

1. रॉबिन्स, एस. प्रशासनिक प्रक्रिया, न्यू जर्सी: प्रेंटिस हॉल इंक. सुजान सिंह, (1967) शारीरिक शिक्षा और मनोरंजन का संगठन और प्रशासन, जोधपुर: जैन ब्रदर्स, 1980, पृष्ठ. 18.
2. अपिथिनोस, इयोनिस डी., "ग्रीस में सभी प्रबंधकों के लिए खेल की कथित दक्षताओं का विश्लेषण"। शोध प्रबंध सारांश अंतर्राष्ट्रीय. 1993;39(5):1334.
3. अमीनुद्दीन, यूसुफ, "खेल प्रशासन में योजना और निर्णय लेना"। फिजिकल एजुकेशन. 1986;43(3):264-268.
4. एमिस और स्लैक, "खेल संगठनों का आकार संरचना संबंध"। जर्नल ऑफ स्पोर्ट्स मैनेजमेंट. 1996;10:76-85.
5. एमिस, जॉन मैथ्यू, "कनाडाई खेल संगठनों में रणनीतिक परिवर्तनों की आंतरिक गतिशीलता"। डिज़िटेशन एब्सट्रैक्ट्स इंटरनेशनल, 1998;50(11):3536-ए.
6. एनेलिसे, गोस्लिन, "दक्षिण अफ्रीकी समुदायों में खेल विकास रणनीति के एक मूलभूत पहलू के रूप में मानव संसाधन प्रबंधन"। जर्नल ऑफ स्पोर्ट्स मैनेजमेंट. 1996;70(7):207-217.
7. बास "अपेक्षाओं से परे नेतृत्व और प्रदर्शन"। डिज़िटेशन एब्सट्रैक्ट्स इंटरनेशनल. 1985;29(12):548-ए.
8. बेयर और डेविड. "कॉलेज एथलेटिक्स के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों परिणामों का पता लगाने के लिए सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य"। जर्नल ऑफ स्पोर्ट्स मैनेजमेंट, 2000, 13(2)।
9. बिट्स जी. ब्रेडा. "सहस्राब्दी में खेल प्रबंधन: एक निर्णायक क्षण"। जर्नल ऑफ स्पोर्ट्स मैनेजमेंट, 2001, 15(1).
10. ब्रायन गॉफ. "विश्वविद्यालय एथलेटिक्स का विश्वविद्यालय पर प्रभाव: अनुभवजन्य मूल्यांकन की समीक्षा और विस्तार"। जर्नल ऑफ स्पोर्ट्स मैनेजमेंट, 2000, 14(2).
11. चेल्लादुरई. "खेल संगठनों में सांस्कृतिक विविधता का प्रबंधन और प्रभाव"। कैनेडियन जर्नल ऑफ स्पोर्ट्स साइंसेज. 1994;16(2):126-133.
12. चेल्लादुरई, पी., और हैगर्टी, टी.आर., "कनाडाई राष्ट्रीय खेल संगठनों की संगठनात्मक प्रभावशीलता के माप"। कैनेडियन जर्नल ऑफ स्पोर्ट्स साइंसेज. 1991;16(2):126-133.
13. चेंग, चिन-फू, "चीन गणराज्य के लिए खेल प्रबंधन में योग्यता मूल्यांकन पर एक अध्ययन किया गया"। शोध प्रबंध सारांश अंतर्राष्ट्रीय. 1993;61:45-89.
14. चो, गन डो., "कोरिया गणराज्य के पाँच प्रमुख निगमों में खेल कार्यक्रमों का एक वर्णनात्मक अध्ययन"। शोध प्रबंध सारांश अंतर्राष्ट्रीय. 1996;58(29):510-बी.
15. कुशिग, जॉन लेमुएल., "उच्च प्रदर्शन वाले एथलीटों के लिए राष्ट्रीय खेल सुविधाओं की योजना बनाना"। शोध प्रबंध सारांश अंतर्राष्ट्रीय. 1996;35(61):1234- ए।
16. डेविड क्रूज़ मैलोय और जेम्स अग्रवाल। "विभेदक संघ और भूमिका-सेट विन्यास: एक खेल संगठन में नैतिक जलवायु की धारणा पर महत्वपूर्ण अन्य लोगों का प्रभाव"। जर्नल ऑफ स्पोर्ट्स मैनेजमेंट, 2001, 15(3)।
17. डेविड के। स्कॉट। "इंटरकॉलेजिएट एथलेटिक्स में नेतृत्व और संगठनात्मक जलवायु का बहु-फ्रेम परिप्रेक्ष्य"। जर्नल ऑफ स्पोर्ट्स मैनेजमेंट, 1999, 13(4)।
18. डेस थ्वाइट्स और एंड्रयू कारुथर्स। "प्रायोजन सिद्धांत के व्यावहारिक अनुप्रयोग: अंग्रेजी क्लब रबी से अनुभवजन्य साक्ष्य"। जर्नल ऑफ स्पोर्ट्स मैनेजमेंट, 1998, 12(3)।
19. एल्ना शार, एडेल मोहम्मद, "मिस्र खेल परिषद का एक मूल्यांकनात्मक अध्ययन"। डिज़िटेशन एब्सट्रैक्ट्स इंटरनेशनल. 1984;46(4):290-ए।
20. एनॉक केई, और जैकब्स जे. "ओलंपिक और पैरालंपिक खेल 2012: सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए रसद योजना और संचालन संबंधी चुनौतियों की साहित्यिक समीक्षा"। पब्लिक हेल्थ। 2008;122(11):1229-1238.

Creative Commons (CC) License

This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.